धर्म और राजनीति

–श्रीमती अनीता खुराना, जयपुर

धर्म का मूलभूत आधार भावना है। धर्म धारण किया जाता है। भावना के वशीभूत होकर व्यक्ति किसी भी धर्म का आलम्बन करता है। ये मन्दिर, मठ, गुरुद्वारे, मस्जिद, चर्च सब भावनाओं को प्रकट करने के स्थान मात्र हैं। ये किसी व्यक्ति विशेष या समुदाय विशेष की धरोहर नहीं, हाँ यह अवश्य कहा जा सकता है कि जिसने उसका आधार स्थापित किया है वह अनन्त शोभा का पात्र है। लेकिन फिर यदि विचार किया जाय तो उस पूर्णब्रह्म परमात्मा के हुक्म के बिना कोई भी किसी भी कार्य के लिए प्रेरित नहीं हो सकता तो कर्त्ता धर्त्ता कौन हुआ–व्यक्ति या वह परमात्मा ? यह जीव तो सम्बल है जिसको वह शोभा देना चाहे दे देता है। फिर यदि अहं के वशीभूत होकर हम यह सोचें कि मैंने यह किया, मैंने वह किया या मेरे बिना कुछ हो नहीं सकता तो यह हमारा व्यर्थ वहम होगा।

जहाँ धर्म हमें मानव जाति में एकता, प्रेम, सद्भाव और सेवा का आदेश देता है वहाँ राजनीति वह नीति है जिससे अन्य पर राज करने की भावना छलकती है। आधुनिक समाज सेवियों व धर्म के बादशाहों को राज करने का कुछ चस्का सा लग गया है। हम जनसाधारण का सही मार्ग प्रशस्त करने से पूर्व हमारे ज्ञाता स्वयं ही एकमत नहीं हो पाते। प्रत्येक अपनी महत्ता को प्रकट करने हेतु एक ही बात के विभिन्न अर्थ निकाल कर प्रस्तुत कर देते हैं और जो मूल वस्तु है उससे बहुत दूर लेकर चले जाते है और सत्य जो सदैव कटु होता है कहने में स्वयं को बचा लेते हैं। मैं उनसे करबद्ध यह निवेदन करूँगी कि वे हम लोगों को क्यों गुमराह करते हैं, क्या इस तरह से हम स्वामी जी की वाणी का सही सार ग्रहण कर पायेंगे ? अतः यह स्वाभाविक है कि हमारा मार्ग प्रशस्त करने में हमारी बुद्धि ही जिस बात की साक्षी देगी या हमें हमारी 'श्रीमुख वाणी' में जिसकी गवाही मिलेगी और जो निस्वार्थ होगी, हम उसे ही मानेंगे, क्योंकि यह तो वैसे भी व्यक्तिगत मामला है।

Nijanand App

धर्म का सम्बन्ध आत्मा से है जिसे हमारे समाज ने शरीरों के धर्म में परिवर्तित कर दिया है। उनकी यह धारणा है कि ऊपरी निर्मलता से अन्दर की निर्मलता आ जाती है जो सर्वथा गलत है क्योंकि आत्मा इस जीव और शरीर से पृथक है और अजर अमर है। हमारे अग्रगणी नेताओं की यह धारणा है कि जिन कर्मकाण्डों और शारीरिक शुद्धियों को उन्होंने अपने धार्मिक संविधान में महत्व दे रखा है, हम भी उन्हें उसी रूप में लेकर आचरण करें अन्यथा वे नाराज हो जायेंगे। विपरीत स्थिति में होता यह है कि व्यक्ति विशेष की जाग्रत बुद्धि उसको वैसा करने में असमर्थ बना देती है तो मानव का यह अन्तर्द्वन्द बाह्यद्वन्द का रूप धारण कर लेता है और समाज में क्लेश संभावित हो जाता है। ऐसे सामाजिक वातावरण को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि धर्म की उन्नति और प्रचार में हम स्वयं अवरोधक बने हुए हैं। प्रत्येक राजनीतिज्ञ को अपने पद और स्थायित्व की चिन्ता है न कि अपने धर्म और स्वामी जी के वचनों और उद्देश्यों के प्रचार व प्रसार की। यदि कोई उसका वास्तव में दर्द लेता भी है तो हम समाजसेवी सदैव इस ताक में रहते हैं कि किस प्रकार से उसकी टांग खींची जाये कि कहीं जन साधारण में व्यक्ति विशेष का महत्व बढ़ न जाए और हम पीछे न रह जाएं। यह सब व्यर्थ के ऊँच-नीच, आगे पीछे के झंझट तो यहीं पर महाप्रलय में प्रलय हो जाएंगे रह जाएंगी केवल प्रेम और सद्भाव की बातें जिनको स्वयं श्री जी ने भी महत्व दिया है :—

ज्यों ज्यों साथ में होत है प्रीत,
तो मोहि को होत है सुख।

अर्थात् हम अपने धनी को दुःख या सुख पहुँचा सकते हैं, अपने साथ में व्यवहार करके।

पूर्ण समाज के विभिन्न भावों का निष्कर्ष निकाल कर और स्वामी जी के पद-चिन्हों को ध्यान में रखते हुए हमारे अग्रगणी नेताओं को हमारा मार्ग प्रशस्त करना चाहिए न कि समाज के एक विशेष समूह के हितों को ध्यान में रखते हुये जनसाधारण की भावनाओं को ठेस पहुँचानी चाहिए। यह तो नहीं कि वे स्वयं जो कुछ कह रहे हैं वह तो ब्रह्मवाक्य है और दूसरे लोगों को उत्साह या प्रेरणा देने वाला परमात्मा ही नहीं। किसी एक बात को लेकर उसकी तह में पहुँचे बिना उसे इतना उछाल देना कि जन साधारण की स्थिति डांवाडोल हो जाए, यह राजनीतिज्ञों के कार्य नहीं तो क्या धर्म ज्ञाताओं के कार्य हैं? राजनीतिज्ञों को ही यह लत होती है कि झूठ या सच कोई ऐसा अंश मिलना चाहिए जिससे बढ़ते हुए पक्ष को नीचा दिखाकर

Nijanand App

जलील किया जा सके और अपने पक्ष को प्रबल किया जा सके, लेकिन उनकी यह कोशिश श्री राजी की मेहर से असफल हो जाती है। हम स्वामी जी के बताये गये एकता व गरीबी लेने वाले पाठ को तो पढ़ नहीं सकते अपितु कोशिश यह करते हैं कि कब कोई ऐसा point मिले कि दूसरे पक्ष पर कटाक्ष किया जा सके। इस प्रकार हम जीवन की सत्यता और स्वामी जी के उद्देश्यों का सही प्रतिपादन नहीं कर पाते अपितु स्वयं भी उनसे दूर हो जाते हैं।

व्यर्थ की मान प्रतिष्ठा और पद-लोलुपता के चक्कर से उस पद की मान-हानि की जाती है। यहाँ मान होता है व्यक्तियों के ऊपरी रूप का न कि उनकी मन व आत्मा के भाव का। सर्वोच्च स्थिति में पहुँच कर भी हम समाज के छोटे-छोटे धन्धों व वारदातों को लेकर अपनी व्यक्ति-गत भावनाओं में बहकर दूसरों को सरेआम जलील करने में लगे रहे तो यह मानहानि उस पदासीन व्यक्ति की नहीं अपितु उस पद की है जो श्रीराज जी की मेहर और जनता के सहयोग से उस स्थिति तक पहुँच सका है। यह राजनीति अन्य क्षेत्रों में तो चलती ही है लेकिन उसकी हम अहं तुष्टि के लिए धर्म की आड़ में प्रोत्साहन दे देते हैं। परिणामतः यह होता है कि जनसाधारण की धार्मिक भावना को प्रोत्साहन मिलने की अपेक्षा उपेक्षा भाव पनप जाता है जो समाज के लिये हानिकारक सिद्ध होता है। किसी भी स्थान विशेष पर धनाढ्य व्यक्तियों को विशेष महत्व और सुविधा प्रदान कर उनको पक्ष में लेने की नीति क्या राजनीति नहीं ? यदि सुन्दर साथ सब समान हैं तो यह प्रथकता व भेदभाव क्यों ? एक कमजोर व्यक्ति व को हम समाज में दुत्कार कर पीछे कर देते हैं जो उसको पाने के लिए तहेदिल ने लालायित रहता है और जो ऊपरी दिल से सिर्फ मर्यादा रखता है हम उसके पीछे पड़ते हैं कि आप पधार कर हमें अनुग्रहीत करें।

व्यर्थ मान प्रतिष्ठा और पदलोलुपता के वशीभूत होकर उस पद की मानहानि की जाती है। यह राजनीति आद्यकालीन समाज व धर्म में नहीं अपितु हमारे धर्म के प्रादुर्भाव काल अर्थात् स्वामी जी के काल से ही समाज में पनप रही है लेकिन राजश्यामा ने तो गद्दी को न देख कर निर्मल आत्मा में ही अपना स्थान बनाया था। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे पदा-सीन पूज्य व्यक्ति सिरदारों में 'श्री मुख वाणी' में स्वामी जी की कही गई यह पंक्तियाँ सही प्रतिलक्षित होती हैं :—

इन फुरमान में ऐसा लिख्या,
करे पातशाही दीन।
बड़ी बड़ाई होएसी पर,
उमराहों के आधीन॥

Nijanand App

कहे कुरान बन्द करसी,
इनके जो उमराह ।
एक तो करसी बन्दगी,
और जो कहे गुमराह ।।

पदासीन व्यक्तियों में आत्मिक गुण तो विद्यमान होते नहीं तो ये लोग अपने में शारीरिक गुण उपजाने में लगते हैं ताकि सुन्दर साथ को अपनी ओर प्रभावित किया जा सके और अपनी महानता अथवा पूजा करवाई जा सके, लेकिन अफसोस कि ये लोग हमारे अन्धविश्वासी धर्म प्रेमियों को गुमराह करते रहते हैं ।

स्त्रियों को समाज में पीछे रखा जाता है, क्या राजी ने यह फरमाया है कि मेरी आत्मायें सिर्फ मर्दों में ही जाकर वास करेंगी क्योंकि मर्द शारीरिक रूप से सबल है । दुनियां के कार्यों के लिए उन्हें मर्दानगी सौंपी गई है जिसको वे इस क्षेत्र में भी उपयोग करते हैं । चिन्ता का विषय है कि वे नारी को केवल एक ही रूप में देखते हैं और उसके अन्य रूपों को भूल जाते हैं । उसके अन्दर नारि सुलभ भावनाएं होती हैं जिनकी वजह से वह पत्नी रूप स्वीकार करने में कठिनाई महसूस नहीं करती । यहां देखा जाता है केवल वासना रूप में न कि उसकी आत्मा में बस रहे परमात्मा को जो स्वयं एक प्रेम की मूरत है और प्रेम के बिना उसे प्राप्त करना असम्भव है । उन्होंने स्वयं फरमाया है कि मेरा वास मोमिनों का दिल है और हम उनको मन्दिरों और 'श्रीमुख वाणी' की सेवा में ढूँढ़ने में लगे हैं । यह पूजा का स्थान और सन्देश है जिसमें जो कुछ कहा गया है उसको practical करने से ही राजी हम पर प्रसन्न हो सकते हैं :—

ज्यों ज्यों गरीबी लिजिये साथ में,
तो धनी को पाइये मान ।

यह मन्दिर सुन्दर साथ के मिलने के धाम स्थान हैं जहाँ हम सुन्दर साथ से प्रेम प्रदर्शित कर सकते हैं और उनके अन्दर विद्यमान राजी को प्रसन्न कर सकते हैं । शर्म की बात है कि जब हमारे अगुए उसको (स्थान को) अपनी property समझ कर उस पर अपनी मनमानी से कार्यकलाप करवाते हैं । वह एक धार्मिक मंच न रहकर राजनीतिक मंच बन जाता है । यहां तक कि राजश्यामा की आरती उतारने के लिए धन की बोली लगती है ।

पदासीन व प्रतिष्ठित धर्मज्ञाताओं को राजनीति छोड़कर ऐसा प्रभावित आचरण व व्यवहार प्रस्तुत करना चाहिये जिससे जनसाधारण उनकी नीति में कुचले जाने की अपेक्षा उनकी शरण में स्वयं को सुरक्षित जान सकें, ऐसी मेरी आकांक्षा है । सम्पूर्ण समाज हित की सद्भावना से प्रेरित होकर मैंने सानुरोध प्रार्थना पत्रिका के माध्यम से की है ।

—○—

Nijanand App